'पर्वत–विजेता दशरथ माँझी' शीर्षक पुस्तक के लोकार्पण–समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–30.09.2016, समय–12:00 बजे दिन)

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सतीश प्रसाद सिंह जी, 'पर्वत–विजेता दशरथ माँझी' पुस्तक के लेखक डॉ॰ वज्रांग प्रताप केसरी जी, कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापकगण, साहित्यकारगण, देवियों एवं सज्जनों!

आज 'पर्वत–विजेता–दशरथ माँझी' पुस्तक को लोकार्पित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। खुशी इसलिए हो रही है कि यह पुस्तक एक ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व पर लिखी गई है, जो समाज के अभिवंचित व कमजोर वर्ग से आता है। यह इंसान अपने व्यक्तिगत कृत्यों के फलस्वरूप सम्पूर्ण समाज का ध्यान आकृष्ट ही नहीं करता, बल्कि उसके लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। स्व॰ दशरथ माँझी को अगर पूरा विश्व आज जान गया है, तो उसके पीछे का कारण है–उनका अपना अनोखा व्यक्तित्व और उसके बल पर कायम किया हुआ इतिहास। इस इतिहास को एक सामान्य इंसान के असामान्य कृत्यों का इतिहास कह सकते हैं। एक ऐसा इतिहास–जिसे कुछ लोग अद्‌भुत प्रेम की अनोखी मिशाल कह सकते हैं और कुछ लोग इसे श्रम का अद्वितीय इतिहास भी कहना चाहेंगे। मुझे लगता है, यह इतिहास इस बात का गवाह है कि कैसे कोई व्यक्ति अपनी निजी पीड़ाओं से उबरने के क्रम में भी सामाजिक कल्याण की भावना से अपने को जोड़ सकता है। दशरथ माँझी जी का जीवन गृहस्थ के रूप में पारिवारिक जिम्मेवारियों को निभाते हुए, बृहत्तर सामाजिक कल्याण के लिए किये

गये चामत्कारिक कार्यों का अनूठा वृत्तांत है। कोई कवि, कलाकार या शहंशाह–व्यक्गित जीवन में अपने किसी प्रिय व्यक्ति से बिछुड़ कर व्यथा के गीत लिख देता है, ऐसी कलाकृतियाँ बना देता है जो उसके दर्द का बयान करने में सफल रहती हैं या विश्व की एक अजूबा धरोहर बन जाती है। परन्तु इन सबसे अलग कोई आदमी अपनी व्यक्तिगत पीड़ा या बिछोह को अभिव्यक्त करने के लिए, व्यापक जन–कल्याण के पथ पर अपने जीवन को होम करने की जिद्द मन में पाल बैठता है–यह विश्व–इतिहास की सचमुच एक अनूठी गाथा है–और इस गाथा के महानायक हैं–स्व॰ दशरथ माँझी।

दशरथ माँझी जी को लेकर अभी बहुत ज्यादा नहीं लिखा गया है। छिटपुट कुछ आलेख पत्र–पत्रिकाओं, किताबों और स्मारिकाओं आदि में मिलते हैं। हाँ, सुना है एक फिल्म भी बनी है, और अच्छी फिल्म बनी है। अभी हाल ही में भोजपुर क्षेत्र के ही एक लेखक श्री निलय उपाध्याय जी ने दशरथ माँझी जी को लेकर एक बड़ा उपन्यास ''पहाड़'' नाम से लिखा है। मैंने सुना है, अच्छी किताब है और एक साहित्यिक कृति के रूप में उसकी चर्चा भी खूब हो रही है। परंतु मुझे लगता है कि दशरथ माँझी जी के जीवन–वृत्त और उनके कृत्यों को लेकर एक शोधपूर्ण पुस्तक लिखा जाना अब बहुत जरूरी है। समय बीतते जाने पर और उनकी पीढ़ी के लोगों के नहीं रह जाने पर, तथ्यों के संकलन में काफी कठिनाई आयेगी। इसलिए यह जरूरी है कि पूरी गंभीरता के साथ उनके जीवन से जुड़े तथ्यों तथा उनके बारे में उनके करीबी लोगों के संस्मरणों आदि को शीघ्र संकलित कर प्रकाशित कर दिया जाय।

'पर्वत–विजेता–दशरथ माँझी' नामक–यह पुस्तक जिसके लेखक डॉ॰ बज्रांग प्रताप केसरी हैं, ने भी दशरथ माँझी जी के जीवन–प्रसंगों

को संकलित करने का एक प्रशंसनीय कार्य किया है। विभिन्न उपशीर्षकों के अन्तर्गत, इन्होंने कविता की पंक्तियों को पिरोते हुए रोचक और रोमांचक ढंग से दशरथ माँझी जी के प्रेम, परिश्रम और त्याग की बेमिशाल ऐतिहासिक गाथा को प्रस्तुत किया है। दशरथ माँझी जी के जीवन से हमें दृढ़निश्चयी होने की प्रेरणा मिलती है। सही मन से अगर कोई इंसान कुछ भी ठान लेता है तो वह अपने उद्देश्य को हासिल कर ही लेता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की पंक्तियाँ हैं कि–

खम ठोंक ठेलता है जब नर,

पर्वत के जाते पाँव उखड़।

मानव जब जोर लगाता है,

पत्थर पानी बन जाता है।।'

–दिनकर जी की यें पंक्तियाँ दशरथ माँझी जी के जीवन पर बिल्कुल सटीक बैठती हैं।

दशरथ माँझी जी ने इतिहास रचकर एक सामान्य मनुष्य के रूप में देवतुल्य गौरव हासिल कर लेने का कीर्त्तिमान स्थापित कर दिया। दशरथ माँझी जी के जीवन की कहानी भी असंभव को संभव बना देनेवाले एक महान तपस्वी, एक महान कर्मयोगी और एक महान जननायक की वीरता, धीरता और दृढ़निश्चयता की कहानी है। केसरी जी ने एक अच्छी शुरूआत की है। मेरा अनुरोध होगा कि और व्यापक और बृहत्तर रूप में दशरथ माँझी जी पर लिखा जाय। खूब लिखा जाये और खूबी के साथ लिखा जाय। मैं आज लोकार्पित हुई पुस्तक के लेखक श्री बज्रांग प्रताप केसरी जी को उनके इस सारस्वत प्रयास के

लिए साधुवाद देता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि वे एक यशस्वी और लोकप्रिय लेखक के रूप में लब्धप्रतिष्ठ बनें। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।